RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper
Available online at: www.rhimrj.com

महाभारत में पुरुष – सौन्दर्य

Dr. Manubhai S. Prajapati
Associate Professor,
Shri U P Arts & Smt MGP Science & Shri VLS Commerce College,
Vijapur, Mehsana, Gujarat (India)

महाभारत में उद्दीपक और परिचयात्मक दोनों ही प्रकारों से पुरुष सौन्दर्य का वर्णन अनेक स्थलों पर प्राप्त होता है | जहों महाभारतीय पुरुष द्रौपदादि नारी के सौन्दर्य पर मोहित हैं वहों महाभारतीय स्त्रियों भी अनेक अलौकिक पुरुषोचित सौन्दर्य के प्रति मुग्ध हैं |

आदिपर्व में स्वयंवर सभा में इन्द्र के तुल्य पराक्रमी अर्जुन को देखकर द्रौपदी मन्द - मन्द मुस्कराती कुन्ती कुमार के समीप वरमाला लिए पहुँची |[1] वनपर्व के नलोपाख्यान में दमयन्ती
हंस के द्वारा राजा नल के अनुपम सौन्दर्य का वर्णन सुनकर ही आकर्षित हो अस्वस्थ रहने लगी थी [2] और पश्चात् नल देवताओं के दूत बनकर आने पर अन्त:पुर की समस्त सुन्दरी स्त्रियों उनके रूप - सौन्दर्य पर चकित हो प्रशंसा करने लगी थी और दमयन्ती तो विस्मित हो कामासक्त ही हो गई थी | आप कौन हैं, आपके सम्पूर्ण अंग निर्दोष और परम सुन्दर हैं, आप मेरे ह्रदय की कामाग्नि को बढ़ा रहे हैं | [3] नल से वियोग होने पर भी वह अनेक बार अपने प्रिय के रूप सौन्दर्य का स्मरण कर उसका वर्णन करती है |[4]

अर्जुन के रूप सौन्दर्य पर तो उर्वशी जैसी अप्सराएँ भी मोहित हैं और प्रणय की याचना तथा उसके साथ रमण की सुन्दर कल्पनाएँ भी करती हैं | धनंजय के रूप सौन्दर्य से प्रभावित हो उसका हदय कामदेव के बाणों द्वारा अत्यंत घायल हो चुका था | वह मदनाग्नि से दग्ध हो रही थी | स्नान के पश्चात् उसने चमकीले वस्त्र और मनोभिराम आभूषण धारण किये और अर्जुन के पास जाकर बोली तुम्हारे गुणों ने मेरे चित्त को आपकी ओर खींच लिया है, मैं कामदेव के वश में हो गई हूँ | [5] इसी प्रकार नागकन्या अलूपी भी अर्जुन को देखकर आसक्त हो उन्हें जल में खींच ले गई थी और उससे प्रणय की याचना की थी |[6]

तपती - संवरण प्रेमाख्यान में तपती संवरण से कहती है कि हे नरेश्वर ! जिस प्रकार आपके प्राण मेरे आधीन हैं उसी प्रकार आपने भी दर्शन मात्र से ही मेरे प्राणों को हर लिया है |[7]

इसी प्रकार अन्यत्र भी आदिपर्व में गंगा शान्तनु के रूप को देखकर मुग्ध हो कामयुक्त हो गई थी और राजा को देखते - देखते तृप्त नहीं होती थी |[8] हिडिम्बा भी भीम के ऊपर मोहित हो गई थी |[9]

पुरुष - सौन्दर्य का सबसे सुन्दर वर्णन दमयंती के द्वारा वनपर्व में महाभारतकार ने किया है | जहों वह पति के रूप,गुण,पराक्रम आदि का स्मरण करती है और अपने पति का परिचय देकर सिंह,गिरि और महर्षियों से उनका पता पूछती हैं | मेरे महायशस्वी स्वामी निषधराज नल गजराज की सि चाल से चलते हैं | वे बड़े बुद्धिमान, महाबाहु, अमर्षशील पराक्रमी, धैर्यवान तथा वीर हैं | [10] मैं कब निषधराज नल की मेघ गर्जना के समान स्निग्ध, गम्भीर, अमृतोपम वह मधुर वाणी सुनूंगी | उन महामना राजा के मुख से 'संवैदर्भि' इस संम्बोधन से युक्त, शुभ, स्पष्ट, वेद के अनुकूल, सुन्दर पद और अर्थ से युक्त तथा शोक का विनाश करने वाली वाणी मुझे कब सुनाई देगी | [11] वे निषध कुल के रक्षक, महातेजस्वी, महाबली, सत्यवादी, धर्मज्ञ, विद्वान्, सत्यप्रतिज्ञ, शत्रुमर्दन, ब्राह्मणभक्त, देवोपासक, शोभा और संपत्ति से युक्त तथा शत्रुओं की राजधानी पर विजय पाने वाले हैं | मेरे स्वामी नृपश्रेष्ठ नल देवराज इन्द्र के समान तेजस्वी हैं | उनके नेत्र

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

विशाल हैं | उनका मुख पूर्ण चन्द्रमा के समान सुन्दर हैं | वे शत्रुओं का संहार करने वाले, बड़े - बड़े यज्ञों के आयोजक और वेद - वेदांग के पारंगत विद्वान् हैं | वे सूर्य और चन्द्रमा के समान तेजस्वी और क्रांतिमान हैं |[12]

इसी प्रकार अर्जुन के पाशुपतास्त्र की प्राप्ति के लिये तपस्या के लिये चल देने पर वियोगिनी द्रौपदी व्याकुल होकर अर्जुन के स्वरूप का स्मरण करती हुई कहती है कि हे पाण्डव श्रेष्ठ ! जो दो भुजा वाले अर्जुन सहस्त्र बाहु वाले अर्जुन के समान पराक्रमी हैं जिनकी नीलमेघ के समान कान्ति है और मतबाले गजराज की सी गति वाले उन कमलनयन अर्जुन के बिना यह काम्यक वन मुझे तनिक भी नहीं भाता |[13]
वैसे महाभारत में मानव सौन्दर्य के प्रसंग में अंगो के रूप सौभाग्य को जीवन की अमूल्य निधि माना गया है और उसका अत्यन्त मुक्तभाव से स्थान - स्थान पर स्तवन किया गया है | अनुशासन पर्व में युधिष्ठिर भीष्म पितामह से प्रश्न करते है कि -

अङ्गानां रूपसौभाग्यं प्रियं चैवं कथं भवेत् |
धर्मार्थकाम संयुक्त: सुख भागी कथं भवेत् || (अनु.पर्व, अ.११)

मनुष्य को अन्गों को प्रीतिकर रूप का सौभाग्य किस प्रकार प्राप्त होता है | धर्मार्थकाम संयुक्त पुरुष किस प्रकार सुख का भागी हो सकता है | वहों यह भी बताया गया है कि किस व्रत, दान-पुण्य से अन्गों का रूपसौभाग्य प्राप्त हो सकता है |[14]

पुरुष के सौन्दर्य के संदर्भ में महाभारत में शारीरिक उच्चता, बलिष्ठ गात्र, दीप्तवर्ण ओर आन्तरिक तेज आदि गुणों का पदे - पदे स्तवन है | कृष्ण, युधिष्ठिरादि पाञ्च पाण्डव, कर्ण, अभिमन्यु, राजा नल आदि महाभारत में पुरुष सौन्दर्य के प्रतीक है | इनके रूप सौन्दर्य का वर्णन महाभारत में प्रायः मिलता है |

महाभारतीय पुरुष पात्रों की शारीरिक उज्जवलता का व्यासजी ने विशेष उल्लेख किया है | उनकी तेजस्विता ओर कान्ति को बताने के लिए तेजोयुक्त अलौकिक उपमान सूर्य, अग्नि, इन्द्र आदि से उपमा दी है | ये उपमान उनके असाधारण शारीरिक उत्कर्ष के ज्ञापक है | वर्ण, गौरवर्णा,[15] हेमवर्णा,[16] श्यामवर्ण आदि का उल्लेख है |

शारीरिक पराक्रम में उनके पुरुष पात्र “न भूतो न भविष्यति “ हैं | वे सर्वजयी, विक्रान्त योधी, नागायुत प्राण, मत्तवारण वारणः, सिंहर्षभ, गजेन्द्र - बल - वीर्य -पराक्रम:, व्याघ्रशूर, सिंहविक्रम:, मत्त्द्विरद विक्रमः हैं | शारीरिक उच्चता में वे शाल सदृश हैं - शाल स्कन्धमिवोदनगमं | (आदिपर्व, पृ. ७३९)

दौणपर्व में अर्जुन अभिमन्यु को शाल के सदृश ऊंचा बतलाते हैं | उसके नेत्र वृषभ के समान विशाल हैं | पृथु लोचन, कमललोचन हैं | वे पीनबाहु, मत्त्बाहु, विशालबाहु, दृढबाहु, दीर्घबाहु[17] वाले हैं | वे सिंह - ग्रीवा और कम्बु - ग्रीवा वाले हैं |

अथ श्यामो महाबाहु सिंहस्कन्धौ महाधुतिः |
कम्बुग्रीव: पुष्कराक्षो भर्तायुक्तौ भवेन्मम || (आदिपर्व, अ.१५१)

वे वृषस्कन्ध, सिंह स्कन्ध[18], सिंहोन्नास बृहत् स्कन्ध, व्यूढ़ोरस्वु[19], दृढवक्षाः और सिंह के समान कटि वाले हैं | वे पाण्डव शुभलक्षण युक्त चन्द्रमा के समान देखने में प्रिय, बडे धनुष धारी, सिंह के समान सत्व युक्त, सिंह की भांति विक्रमी, सिंह के समान ग्रीवा वाले मनुष्यों में इन्द्र के समान और देवों के समान पराक्रम युक्त होकर दिन - प्रतिदिन बढने लगे |[20]

द्रौपदी के स्वयंवर के पश्चात् आदि पर्व में कृष्ण युधिष्ठिर का रूप वर्णन करते हुए कहते हैं कि हे अच्युत ! जो विकसित कमलदल के समान विशाल नेत्रों वाले, दुबले - पतले, विनयशील, गोरे, महान, सिंह की सी चाल चलने वाले तथा लम्बी, सुन्दर एवं मनोहर नासिका वाले पुरुष अभी यहीं से निकले हैं वे धर्मपुत्र युधिष्ठिर हैं | [21] भीमसेन के रूप - सौन्दर्य पर मोहित होकर तो यक्ष, गन्धर्व स्त्रियों भी अपने प्रियतम के पार्श्व में बैठकर निश्चल होकर उन्हें देख रही थी | उनका कद बहुत ऊंचा था, शरीर का रंग स्वर्ण सा दमक रहा था, उनके संपूर्ण अङ्ग सिंह के समान सुदृढ थे, वे युवा थे, वे मतवाले हाथी के समान मस्तानी चाल से चलते थे | उनका वेग मदोन्मस्त गजराज के समान था | मतवाले हाथी के समान ही

उनकी आंखे लाल - लाल थी | वे समरभूमि में मदोन्मत्त हाथियों को हटाने में समर्थ थे | अपने प्रियतम के पार्श्व में बैठी हुई यक्ष और गन्धर्व स्त्रियों सब प्रकार की चेष्टाओं से निवृत्त होकर स्वयं अलक्षित रहकर भीमसेन को देख रही थी | वे उन्हें सौन्दर्य के नूतन अवतार से प्रतीत होते थे |[22]

इसी प्रकार आश्रमवासिक पर्व में पाण्डवों के रूप - सौन्दर्य का जो वर्णन संजय के मुख से कराया गया है वह बहुत सुन्दर है | इनके पार्श्व में ये जो महा धनुर्धर और श्याम रंग के नवयुग दिखाई देते है | जिनके कन्धे सिंह के समान ऊंचे है, जो हाथियों के युथपति गजराज के समान प्रतीत होते हैं | और हाथियों के समान मस्तानी चाल से चलते हैं, ये कमल दल के समान विशाल नेत्रों वाले वीरवर अर्जुन हैं |[23] कर्ण पुरुष सौन्दर्य के आदर्श प्रतीक हैं |वे बडी आंख वाले तथा महायशस्वी थे | वे कर्ण शत्रुदल के विनाशक थे, उनका वीर्य पराक्रम सिंह, वृषभ और गजेन्द्र के समान था | उनकी दीप्ति सूर्य के समान, कान्ति चन्द्र के और तेज अग्नि के सदृश था | वे सुवर्ण के ताड के समान लम्बे थे | वे सूर्य कुमार अनेक गुणों से युक्त, सिंह के सदृश शरीर धारी और युवा थे |

कन्यागर्भः पृथुयशाः पृथायाः पृथुलोचनः |
तीक्ष्णांशोभास्करस्यांशः कर्णोऽरिगण सुचन: ||
सिंहर्षभ गजेन्द्राणां बल - वीर्य - पराक्रम: |
दीप्ति - कान्ति - द्युति गुणैः सुर्यन्दुज्वलनोपम ||
प्रान्शुः कनकतालाभः सिंह संहनमो युवा |
असंख्येय गुणः श्रीमान् भास्करस्यात्म सम्भवः || (आदिपर्व, अ.१३५)

कर्णादि पुरुष रत्नों की वाणी भी मेघ के समान गम्भीर थी |[24]

राजा नल तो अश्विनी कुमार और कामदेव के साक्षात् अवतार थे | हंस उनके रूप का वर्णन करते हुए कहता है कि हे राजकुमारी ! निषध देश में नल नाम के प्रशिद्ध राजा हैं जो अश्विनी कुमार के समान सुन्दर हैं | मनुष्यों में तो उनके समान कोइ है ही नहीं | सुन्दरी वे रूप की दृष्टि से मूर्तिमान कामदेव से ही प्रतीत होते है |[25] महाभारतीय पुरुषों में बाह्य सौन्दर्य के साथ आन्तरिक उत्कर्ष का भी समावेश है | वे बुद्धि में बृहस्पति के समान, दृढता में हिमालय के समान,क्षमा में पृथिवी की भान्ति, गाम्भीर्य में समुद्र के सदृश हैं | द्रौणाचार्य और भीष्म पितामह में ये गुण उच्चतम सीमा तक विद्यमान हैं |

इस प्रकार आन्तरिक और बाह्य सौन्दर्य के दर्शन महाभारत के पुरुष पात्रों में होते हैं |

संदर्भ सूचि :

1. आदिपर्व, पृ.५४३
2. वनपर्व, पृ.११०१
3. वही
4. वही
5. वनपर्व, पृ.१०७८-८०
6. आदिपर्व, पृ.६१२)
7. आदिपर्व, पृ.५०६ श्लोक २१
8. वही, पृ.२९९,३३७
9. वही, पृ.४६२
10. वनपर्व, पृ ११२३

11.वही
12.वही, पृ.१२२५,नलो.
13.वही, पृ.११७०
14.अनुशासनपर्व पृ.५८४१
15.वही, पृ.५४५
16.वही, पृ.४५१
17.आदिपर्व, शाकुन्तलोपाख्यान,पृ. २०८
18.वही
19.वही
20.वही, अ.१२३ पृ.३६८
21.वही, पृ.५४५
22.वनपर्व, अ.१४६, पृ.१३५५
23.आश्रमवासिक पर्व, अ.२५,पृ.६४३१
24.आदिपर्व, पृ.४१०
25.वनपर्व, पृ.१०९७

2016, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)